REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2023

# 'श्रीकांत वर्मा का रिपोर्ताज साहित्य'

**आजिनाथ दौलतराव मनगटे**
**शोध छात्र, हिंदी विभाग, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद.**

## सारांश

आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य का विकास विभिन्न विधाओं से हुआ है। जिसमें उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध इस कल्पना प्रधान विधाओं के साथ संस्मरण, रेखाचित्र,डायरी,साक्षात्कार, यात्र-वृत्तांत एंव रिपोर्ताज जैसी अकाल्पिक विधाओं का समोवश है ।

सामान्यत: रिपोर्ताज विधा अन्य गद्यविधाओं की तरह हिंदी साहित्य की आधुनिक काल की उपज है। उन्नीउसी शताब्दी के अन्तिम और बीसवीं शताब्दी के आरंभीक वर्षो में कुछ तो बाहय प्रभाव से और कुछ हमारे राष्ट्रीय-सामाजिक जीवन की विसंगतियों के कारण साहित्य के विकास मे योगदान रहा ।

'रिपोर्ताज' शब्द की उत्पत्ति के विषय मे विध्दानों मे पर्याप्त मतभेद है कुछ विध्दीनोने 'अंग्रेजी शब्द 'रिपोर्ट ' के समानार्थी 'रिपोर्ताज'शब्द को हिन्दी में स्वीकार कर लिया गया है।'१

डॉ.कृष्णदत्त पालीवाल के शब्दो में 'जिस रचना में वर्ण्य विषय का आँखो-देखा तथा कानों-सुना एैसा विवरण किया जाय कि पाठक ही ह्यतंत्री के तार झंकृत को उठें और वह उसे भूल न सके, उसे 'रिपोर्ताज' कहते है।'२

हिंदी रिपोर्ताज के अंतर्गत श्रीकांत वर्माजी का महत्वपूर्ण स्थान है। यह बाब अलग है के वे एक प्रसिध्द कवी है किन्तु साहित्य के अन्य विधाओं मे भी उन्होने आपनी कलम सशक्तता से चलाई है ।

रिपोर्ताजकार के रुप में वर्माजी को उनकी यात्रा-संस्मरणात्मक रिपार्ताज 'अपोलो का रथ' स्थापित करती हैं। यह रिपोर्ताज उन्होंने यूरोप पर लिखे हैं ''यूरोप के आंतर्विरोधों का पहली बार किसी भारतीय लेखक ने इतनी बारीकी और तटस्थता के साथ विश्लेषण किया हैं। यूरोप का अतीत और वर्तमान जिस बिंदु पर जा कर मिलते और अलग होते हैं, उसे समूची मनुष्यता के भविष्य के लिए निर्णायक मानते हुए लेखक ने इतिहास के उन प्रश्नो से साक्षात्कार किया हैं।''३ इसके अलावा पत्र-पत्रिकाओं में भी इनके रिपोर्ताज प्रकाशित होते रहे हैं। उनका 'आश्वासन सब देते हैं करता कोइ कुछ नहीं' सारिका में प्रकाशित रिपोर्ताज हैं। 'अपोलो का रथ' में संकलित रिपोर्ताजों में 'हिटलर की वधशाला', 'फ्रेंस के इधर-उधर' 'मानवीय स्वतंत्रता की तलाश', 'मध्यरात्री का सूर्य', 'अंतीत और वर्तमान', 'रात का पहरा', 'सेक्स की दुकान', 'लुव्र', 'बीसवीं सदी का जादुई समाज', 'अँधेरे का क्षेत्र' आदि का समावेश है। वर्मा जी के रिपोर्ताज हिंदी रिपार्ताज साहित्य में अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व रखते हैं।

श्रीकांत वर्मा व्दारा लिखा गया अपोलो का रथ यह संग्रह ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक रिपोर्ताज है। इन रिपोर्ताजों के माध्यम से लेखक हमारे सामने यूरोप का चित्र खिंचते हैं। यह रिपोर्ताज लेखक की यूरोपीय यात्रा के संस्मरण है, 'अन्याय, उत्पीऱण, विषमता, नरहसंहार, जातिभेद के बीच मानवीय स्वतंत्रता की तलाश यूरोपीय अस्तित्व का मुख्य आधार रही है। नीरों से लेकर हिटलर तक, सुकरात से लेकर सार्त्र तक यूरोप जिस यात्रा से गुजरा है, प्लाजेंसी लूव्र, बरसाई, स्ट्रेटफोर्ड एवन उसके पडाव हैं।

संग्रह में १४ शीर्षको के अंतर्गत लेखक ने अपनी बात रखी हैं। जिसमें से रिपोर्ताज की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। 'हिटलर की वधशाला', 'फेंस के इधर उधर', 'लव', 'सेक्स की दुकान', 'डथ ऑफ ए सेल्समैन', और 'अंधेरे का क्षेत्र'।

'हिटलर की वधशाला' एक ऐतिहासिक रिपोर्ताज है। इसमें लेखक ने हिटलर के शासन काल सन १९३३ से १९४५ तक की गई लोगों लोगों की हत्याओं की वास्तविकता बया की है। इस रिपोर्ताज का कथ्य पढ़ने के बाद हिटलरने जर्मनी में जो अमानवीय नरसंहार किया था वह इतिहास की ऐसी घटनाओं में से एक महाभयानक घटना, पिशाची वृत्ति का चरमोत्कर्ष है का भाव मन में जागता हैं।

लेखक ने इस रिपोर्ताज को जो शीर्षक दिया है, वह इस रिपार्ताज को पढ़ने के बाद ही कितना उचित है उसका पता चलता है। वध पशुओं, का किया जाता है, परंतु यहाँ पर उससे भी बदत्तर वध मनुष्यों का किया जाता के चित्र हैं। 'हिटलर की वधशाला' का नाम था प्लात्सेंसी। इसके बारे में वर्माजी लिखते हैं, 'प्लात्सेंसी ! पुराने कैदखाने का एक छोटा सा कमरा, जिसकी छत पर सूलियाँ बनी हुई हैं। जब ये सूलियाँ नहीं बनी थीं तब यहाँ गायों और सूअरों का वध किया जाता था। हिटलर की निगाह में मनुष्य और पशु में वाकई कोई फर्क नहीं था। १९३३ में गोएरिंग के नेतृत्व में गेस्टपो की स्थापना के साथ ही हिटलर ने प्लात्सेंसी के इस अँधेरे सीलभरे कोठे को, जहाँ रोशनी के लिए केवल दो सुराख थे, स्त्री, पुरूषों और बच्चों की वधशाला में परिणत कर दिया। सूलियों के अलावा दीवार के एक किनारे सीमेंट का एक चबूतरा बनाया गया, जिस पर लिटाकर उस्तरे से हत्या की जाती थी।'४

लेखक ने हिटलर की अमानवीयता का परिचय इसमें दिया है। उसने लेखक, अभिनेता अनुवादक प्रोफेसर बुध्दिजीवी पादरी समाजसेवी कम्युनिष्ट फौजी अफसर, छात्र, राजनेता, मजदूर, किरानी, यहूदी, अनार्य किसी को भी न छोड़ने की बात कही है। न ही किसी आयु को छोड़ा है ३५, ५०, ७५, ८५ और न ही १५, १४ साल के बच्चों को। लेखक हिटलर द्वारा हत्या किए हुए जूलियस कूचिक ईवा मारिया, अल्फ्रेड डेल्प, हेल्मुय हुबनर, जोआना किर्चनर, बिल्हेम ल्यूशनत्य, रॉवर्ट स्टेम, क्लाउस स्टाफेनबर्ग, फ्रीडरिख उल्ब्रिख्त, लुडविग बेक आदि के संदर्भ दिए है। लेखक लिखते हैं, 'केवल एक रात में १८६ व्यक्तियों की गरदने उतार दी गयी, प्रति मिनट एक व्यक्ति की रफतार से ! दूसरे दिन, १० सितंबर को, १०८ व्यक्ति बधिक के सुपुर्द किए गए ।'५ इस प्रकार लेखक ने अनेक संदर्भ और आकडे देकर हमारी आखें खोलने का प्रयास किया है कि अगर ऐसे इतिहास को दौहराना नहीं है तो हमें क्या करना चाहिए। रिपोर्ताज के अंत में नवम्बर १९४४ में गोली से उड़ाये जाने से पहले इटालवी छात्र जियाकोमो उलीवी ने लिखी हुई बात का हवाला देते हुए लिखा है, छात्र जियाकोमो उलीवी ने लिखा था, 'जरा इस पर गौर करो ! यह सब इसलिए हुआ कि तुम लोगो ंने अपनी आँखे बंद कर रखी थी।'६

'फेंस के इधर-उधर' शीर्षक के रिपोर्ताज में वर्मा जी ने हिटलर की सत्ता की बागडोर संभालने याने ३० जनवरी १९३३ की उस ऐतिहासिक उथल-पुथल की बात की है, जब हिटलर ने लोकतंत्र को समाप्त कर अपनी नाझी सत्ता की स्थापना की थी। इस शीर्षक के अंतर्गत लेखक जर्मनी और यूरोप के बीच के युध्द को रेखांकित करते हैं। साथ ही युध्द समाप्ती के बाद बर्लिन का जो चार विभागों में बटवारा हुआ था उसे भी स्पष्ट करते हैं। सन १९६१ में बर्लिन की जो दिवार बनाई गई थी उससे एक देश के लोग दो विभागों में बट गए थे। एक था पश्चिमी बर्लिन और दूसरा था पूर्वी बर्लिन। पश्चिमी बर्लिन पर साम्यवाद का प्रभाव था। हिटलर ने पूरी तरह से विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता छीन ली थी। लेखक लिखतें है, 'जब भी किताबें जलायी जाये, कलाकृतियाँ नष्ट की जाये और मूर्तियाँ भंग की जाये, यह समझ लेना चाहिए कि फॉसिज्म नजदीक है।'७

लेखक पूर्वी बर्लिन के घुटन के कारणों में राजनैतिक कारणों की अपेक्षा, सांस्कृतिक कारणों की अधिक प्राधानता होने की बात करते हैं। यह रिपोर्ताज बर्लिन की युध्द में हुई हानि और विभीषिकाओं को हमारे समाने रखता है।

'लूव्र' शीर्षक का रिपोर्ताज फ्रान्स में ऐतिहासिक संदर्भाे , मूर्तियों, के लिए बनाये गए 'लूव्र' संग्रालय पर लिखा गया ऐतिहासिक रिपोर्ताज है। लूव्र यह संग्रालय राजप्रसादों को रूपांतरीत करके बनाया हुआ है। लेखक इसके माध्यम से फ्रान्स के युध्दमय इतिहास को उजागर करते हैं। वे लिखते हैं 'युध्द, घृणा, प्रेम, बर्बरता, लिप्सा, जुगुप्सा, हिंसा, सौदर्य, विद्रूप सब कुछ लूव्र में संग्रहित है। कैनवस, काष्ठ, कांस्य, मिट्टी, लोहा, स्वर्ण, काँच-पिछले ढाई हजार वर्षाे में मनुष्य ने अपनी कल्पना और संवेदना की अभिव्यक्ति के लिए जिन भी माध्यमों का इस्तेमाल किया, वे सब लुव्र की संपदा है।'८

लेखक आगे लिखते हैं, 'लूव्र के दीवारों पर फ्रान्स के राजाओं, उनकी रानियों, सेनापतियों और इतिहास-पुरूषों का लास्य, शौर्य और पतन मूर्तियों के रूप मे साकार है।'९

'सेक्स की दुकान' शीर्षक का रिपोर्ताज एक सामाजिक रिपोर्ताज है। इसमें एम्सटर्डम शहर को केंद्र में रखकर यूरोपीय लोगों के सेक्स संबंधी व्यवहार को चित्रित करने का प्रयास किया है। सेक्स संबंधी यूरोप और भारतीय धारणाओं, विचारों और अनुभूतियों की ओर भी संकेत किया है। यूरोप में सेक्स की दुकान लगाने के संदर्भ में स्त्रियों को स्वतंत्रता है। परंतु इससे बाहर निकलने का रास्ता नहीं है। यह भी स्पष्ट किया है। लेखक सेक्स की दुकानों के बारे में लिखते हैं, 'एम्सटर्डम अकेला शहर नहीं है जहाँ कि रतिलीला अहर्निशी चलती है। समूचे यूरोप में सैक्स की हजारों दुकाने हैं, जहाँ या तो परदे पर या सजीव रतिलीला चौबीसों घंटे दिखायी जाती है। हाम्बुर्ग में प्रवेश शुल्क है पंद्रह मार्क, पेरिस में दस, फ्रांक, स्टाकहोम में बाईह क्रोनर और एम्सटर्डम में पांच डालर।'१० लेखक लिखते हैं कि इस व्यापार में ' केवल साधारण नागरिक ही नहीं बल्कि मंत्री, राजनेता, अभिनेता और जज भी शामील हैं'।

यूरोप कहाँ जा रहा है कोई फिल्म नहीं, जिस का थीम सेक्स न हो। कोई उपन्यास नहीं जिसका सरोकार सेक्स न हो। कोई शहर नहीं जहाँ चकले न हो, कोई लडकी नहीं जिसके ताल्लुकात एक से अधिक पुरूष के साथ न हो।'११ जीवन की सुंदर अनुभूति को यूरोप ने पूरा बाजारू बनाने का भाव इस रिपोर्ताज से स्पष्ट होता है।

'डेथ ऑफ ए सेल्समैन' में लेखक ने युध्द के बाद यूरोपीय बदला हुआ समाज जीवन रेखांकित किया है। यूरोपीय समाज की नीव उपभोक्तावादी प्रवृत्ति कैसे बन रही है यह स्पष्ट किया है। लेखक लिखते हैं, 'पँुजीवादी समाज ने जिंदगी की परिभाषा सरल कर दी है। जिंदगी को पैसे की भाषा में परिभाषित किया जा सकता है। सवाल यह नहीं कि कौन बिकाउ है, कोन नही ? सवाल है कि किस की कीमत कितनी है?'१२ 'अँधेरे का क्षेत्र' शीर्षक का रिपोर्ताज यूरोप के सांस्कृतिक जीवन को स्पष्ट करता है। भारतीय सांस्कृतिक उदाहरणों से स्पष्ट करने की कौशिश की गई है। इस प्रकार वर्माजी यूरोप के जन-जीवन को विभिन्न तथ्यों से हमारे सामने रखते हैं।

श्रीकांत वर्माजी के 'अपालो का रथ' इस रिपोर्ताज को पढते हुए हम तत्कालीन परिस्थिति के चित्र को हमारे सामने प्रस्तुत देख सखते है। उन्होने उचित शब्दो में तत्कालीन परिस्थितियों का वर्णन अपने इस रचना में किया है । मनुष्य की पिरा , दु:ख, वेदना, लाचारी आदि भावनाओ को उन्होने बडे ही प्रभावि तरिके से चित्रित किया है । इसे देखकर हम श्रीकांत वर्माजी को एक सशक्त रिपोर्ताजकार कह सकते है ।

**संदर्भ ग्रंथ :-**


१. डॉ.इंद्रपालसिंह 'इंद्र' - हिन्दी साहित्य चित्तन, पृ.३५६
२. संपा.डॉ.नगेंद्र - हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ.७२९
३. श्रीकांत वर्मा - अपोलो का रथ, पृ. १
४. वही, पृ. १०.
५. वही, पृ.१२.
६. वही, पृ.१४.
७. वही, पृ.१६.
८. वही, पृ.६५.
९. वही, पृ.६५
१०. वही, पृ.७३
११. वही, पृ. ७३,७४
१२. वही, पृ.८२.

**आजिनाथ दौलतराव मनगटे**
**शोध छात्र, हिंदी विभाग, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद.**